International Journal of Creative Research Thoughts
Volume 1, Issue.12, December 2013
ISSN:-2320-2882

ORIGINAL ARTICLE

यौन अनाचार (बलात्कार)की समस्या–गॉधीवादी समाधान

डॉ0 जितेन्द्र शर्मा

एसोसिऐट प्रोफेसर–दर्शनशास्त्र

महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट सतना (म.प्र.)

शोध आलेख–सार

प्रस्तुत शोध आलेख में देश में दिनानुदिन वर्द्धमान यौन अनाचार (बलात्कार) की समस्या और गांधीवादी समाधान पर एक गवेषणात्मक चिंतन प्रस्तुत किया गया है। भारतवर्ष में दिवस प्रति दिवस वृद्धिंगत हो रहा यौन अनाचार अब एक सामाजिक समस्या का रूप धारण करता जा रहा है। आलेख के प्रथम भाग में यौन अनाचार की समस्या के साम्प्रतिक स्वरूप और उसके मूल कारणों पर प्रकाश डाला गया है। यद्यपि बलात्कार के ढेर सारे कारण हैं परन्तु भोगवादी सभ्यता और संस्कृति, वैयक्तिक स्वतन्त्रता के नाम पर यौन उच्छृ खलता, नारी तन को एक 'प्रोडक्ट' मानते हुये उसका प्रदर्शन, नारियों के आधुनिक परिधान (या तो शरीर पर कम से कम कपड़े हो या फिर अत्यन्त तंग कपड़े हो) विज्ञापनों की चकाचौंध, इलेक्ट्रानिक मीडिया– जिनका प्रयोग कदाचित भोगवाद की प्रचार गाड़ी के रूप में किया जा रहा है, लम्बी न्यायिक प्रक्रिया आदि बलात्कार के प्रमुख कारण के रूप में रेखांकित किये जा सकते हैं यद्यपि बापू के समय 'बलात्कार' एक समस्या के रूप में कभी भी राष्ट्र के समक्ष प्रस्तुत नहीं हुआ तथापि इस महामानव के नैतिक दर्शन में इस समस्या के समाधान के बिन्दु विद्यमान हैं। जिसे आलेख के उत्तरवर्ती भाग में विवेचित किया गया है। जीवन के प्रति स्वस्थ एवं पूर्णतावादी दृष्टि कोण, ब्रह्मचर्य का पालन, भोगेच्छाओं का सर्वथा नियमन, मद्यपान का सर्वथा और सर्वविध त्याग वे प्रमुख उपाय हैं

Please cite this Article as : डॉ0 जितेन्द्र शर्मा: यौन अनाचार (बलात्कार)की समस्या–गॉधीवादी समाधान
: International Journal Of Creative Research Thoughts, Volume 1, Issue.12, December 2013

जिनको वैयक्तिक और सामाजिक जीवन में उतारकर बलात्कार की धूमाग्नि का सर्वथा अंत किया जा सकता है। उपदेश अथवा प्रवचन से इस वीभत्स समस्या का समाधान संभव नहीं है। प्रत्येक नागरिक को बापू द्वारा प्रतिपादित नैतिक दर्शन को अपने चरित्र एवं दैनिक व्यवहार का एक अंग बनाना पड़ेगा।

महिलाओं के लिये विश्व में चौथा सबसे खतरनाक देश भारत घोषित हो गया है। यह वह देश है, जहॉ देवी की पूजा होती है। देवियों का नाम प्रारंभ में होता है। दो नवरात्रियॉ मनायी जाती हैं। जहॉ सत्संग और प्रवचनों में 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः की गॅूज वातावरण को स्पांदित करती रहती है। फिर ऐसी स्थिति क्यों आई? अब यह क्यों कहा जा रहा है कि यह मेरा भारतवर्ष वह देश है, जहॉ स्त्री जीवित जलाई जाती है। जहॉ स्त्री गर्भ में मारी जाती है, जहॉ स्त्रियों की इज्जत के नाम पर हत्या (आनर किलिंग) की जाती है, जहॉ स्त्री पर तेजाब डालकर उसकी शक्ल बिगाड़ने की कोशिश की जाती है, जहॉ स्त्री की तस्करी की जाती है, जहॉ सरेराह उसे छेड़ा जाता है। यह स्थिति 21वीं सदी के दूसरे दशक की है, जब हम वैज्ञानिक प्रगति के चरम शिखर पर पहुॅचने की बात कर रहे हैं।

यह सोचकर हमें शर्मिंदा होना चाहिये कि देश में करीब 30 लाख यौन कर्मी हैं, जिनमें अधिकतर बच्चियॉ हैं। "लैंसेट" पत्रिका ने एक सनसनी खेज ऑकड़ा दिया है कि पिछले तीन दशकों में 42 लाख से 121 लाख तक कन्या भ्रूण की हत्यायें भारत में पैसे वालों के घरों में हुई जिनके यहॉ पहली संतान भी लड़की थी। इन सबने बड़ी कुशलता पूर्वक 'सलेक्टिव अबॉर्शन' को प्रयुक्त किया, किसी को कानो–कान खबर न होने दी, पर ऑकड़े पत्रिका के हाथ लगे हैं। ब्रिटिश पत्रिका यह लिखती है कि यह दहलाने वाला ऑकड़ा बताता है कि भारतीय मानसिकता किस तरह ग्लोबल अनुपात को गड़बड़ा रही है। यौन हिंसा के मामले में भी हम सबसे आगे हैं। यह यौन हिंसा सभ्य समाज में बैठी हुई बीमार मानसिकता और स्त्री विरोधी सोच की उपज है। इसका शिकार मात्र कम या तंग कपड़े पहनने वाली

फैशन परस्त युवतियॉ ही नहीं, बल्कि घरेलू महिलायें, नौकरानियॉ और मासूम बच्चियॉ भी बन रही हैं। स्त्री को भोग्या मानकर जब चाहे तब छेड़ना, उठा लेना, बलात्कार करके मार देना या घायल स्थिति में छोड़ देना हमारे देश में अब आम बात हो गयी है। किशोरियों के साथ गैंग रेप (सामूहिक बलात्कार) कर उनके शरीर को क्षत–विक्षत कर देना थाना परिसरों (जहां लिखा होता है– परित्राणाय साधूनाम् विनाशाय च दुष्कृताम्) के भीतर होने वाली घटनायें लगातार प्रकाश में आ रही हैं। भारतीय पुलिस का वरताव हैवानियत से भी बढ़कर होता जा रहा है। बीमारी की स्थिति से लेकर चिता पर जाने तक कोई स्त्री सुरक्षित नहीं है।" नारी के साथ क्या नहीं हो सकता। नवधनाढ्यों एवं तथाकथित सभ्यों के मध्य बढ़ रहा एक शौक तो देखिये– 'वाइफ स्वैपिंग'– पत्नी बदलना। सारी नैतिक वर्जनायें एक ओर रख पढ़े–लिखे नवधनाढ्य अपना टेस्ट बदलने के लिये कार की चाभियां बदलते हैं। जिनके पास जिसकी चाभी आ जाती है, उसकी पत्नी से वह उस रात मौज–मजा कर सकता है। इसमें पत्नी को कुछ कहने का अधिकार नहीं है, क्यों कि उसकी शापिंग हेतु–जिम– सजने आदि का समुचित खर्च पति महाशय दे रहे हैं। सामंतवादी मानसिकता चली गयी, ऐसा कौन कह सकता है।[1]

"चारित्रिक तेत्र को पीछे छोड़ता समाज",शसंज्ञक शीर्षक से प्रतिष्ठित दैनिक समाचार पत्र 'आज का' सम्पादकीय तो देखिये– व्यक्ति, परिवार समाज एवं राष्ट्र की क्रमबद्ध श्रंखला ही उपयोगी सामाजिक प्राणी घोषित करती है। उस नाते उसका व्यक्तित्व समाज के लिये भी महत्वपूर्ण होता है। शक्ति क्यों कि मानव के दोनों रूपों में है फिर भी स्वयं ब्रह्म ने नारी शक्ति को ऊॅचा पद प्रदान किया है। आधी आबादी की परिचायक नारी शक्ति प्राचीन समय से शक्ति की सार्थकता और संवर्धन के लिये प्रशंसनीय है। अपाला, गार्गी, सारन्ध्रा, अहिल्या, सीता जैसी अनेक स्त्रियां हुई हैं जो आज भी गौरवान्वित व्यक्तित्व की परिचायक हैं। बदलते समय के साथ मुगल शासन काल में संकुचित सोच वाली मानसिकता ने स्त्री को मात्र 'देह' घोषित कर उसे पर्दों से ढांक दिया, किन्तु उसकी शक्ति का अनादर भी अपने हिसाब से जारी रखा। मानवीय शक्ति के उपासक प्राचीन पुरूषों ने भी अपनी

शक्ति का उपयोग किया तथा जीवन सार्थक किया। समय बीतने के साथ शक्ति का रूपान्तरण हुआ। पुरूषों को प्राचीन समय से आज संविधान में भी स्त्री–पुरूष दोनों अधिकार बराबर हैं। किन्तु महिलाओं के प्रति हो रही दरिन्दगी हमें यही बता रही है कि आज भी महिला मात्र "वस्तु" बनकर रह गयी है। जहॉ बल पूर्वक उस पर हमला उसकी अस्मिता को तहस–नहस करने के लिये ही किया जाता है। स्त्री का एक रूप प्रकृति भी है। प्रकृति को अपनाकर उससे दोस्ताना व्यवहार ही विधाता की रचना को आपराधिक सोच एवं गन्दे वातावरण से बचाने में सक्षम है। एक समय था जब संत पुरूषों, धर्मगुरूओं के सान्निध्य में स्त्री सुरक्षित थी। भौतिकता की ऑधी में मानव की विचार शीलता रसातल में जा चुकी है उसकी चेतना शून्य हो चुकी हैं। विचारशीलता की नई दुनिया में चरित्र की गिरावट मानव स्वरूप को किस तरह सुरक्षित रख पायेगी? सर्वशक्तिशाली होकर कहीं तो हमारे आपसी मतभेदों ने हमें असुरक्षा दी तो कहीं स्वयं ही चरित्र को पतित कर हमने अपनी सुरक्षा में सेंध लगा ली। मानव होकर जागरूक रहना, विकास करना हमने सीखा किन्तु अंधभक्ति अंधविश्वास को साथ रख के हमने अपने पांव पर स्वयं कुल्हाडी भी मार ली। जहॉ हमने साधारण जीवन में मर्यादित रहकर जीना सीखा किन्तु अपने उत्थान के नैतिक पहलुओं की तरफ से ऑखे भी बन्द कर ली।

अखंड ज्योति पत्रिका एवं दैनिक समाचार पत्र के उक्त दोनों सम्पादकीय लेख राष्ट्र की वर्तमान चारित्रिक दशा और दिशा पर नीर–क्षीर विवेचन करते हैं। चारित्रिक गिरावट परिणामतः यौनअनाचार (बलात्कार) का दानव गॉव के गली कूचों से निकलकर महानगरों के रेस्त्रां, होटल और भीड़ भरे बाजारों से होते हुये शासकीय सेवकों, राजनेताओं, सांसदों और मन्त्रियों तक को अपनी 'आक्टोपसी' गिरफ्त में ले चुका है। राष्ट्र की युवाशक्ति को कामान्धता का धुन लग गया है, परिणामतः अपने ही ओजस, तेजस और ब्रह्मस को खोती हुई खोखली होती जा रही युवा पीढ़ी 'कामातुराणां न भयं न लज्जा' का नंगा नाच कर रही है। ऐसे में बापू का दर्शन अंधेरे में टिमटिमाते दीपक की भॉति समस्या के समाधान के विकल्प में

रूप में प्रतीत होता है। आइये, सर्वप्रथम समस्या के स्वरूप और मूल कारणों पर दृष्टि डालें, तदुपरान्त समस्या के गांधीवादी समाधान की तरफ अग्रसर हों।

भारतीय दण्ड संहिता की धारा 376 के अनुसार बलात्कार एक दण्डनीय अपराध है जिसमें अपराधी को आजीवन कारावास तक की सजा हो सकती है। इस धारा के अनुसार जब कोई पुरूष किसी स्त्री से उसकी इच्छा के विरूद्ध या सम्मति के बिना मृत्यु का भय दिखाकर सम्भोग करता है तो वह बलात्कारी कहलाता है। कुछ देशों में पत्नी की इच्छा के विरूद्ध किया गया सहवास भी बलात्कार की श्रेणी में आता है। यदि कन्या अपरिपक्व है अर्थात् 16 वर्ष से कम आयु की है तो उसकी सहमति से किया गया सहवास भी बलात्कार की श्रेणी में आता है।[2] सामान्यतया बलात्कार दो प्रकार के होते हैं। एक ही व्यक्ति द्वारा किया गया बलात्कार और कई व्यक्तियों द्वारा किया गया सामूहिक बलात्कार। एक व्यक्ति द्वारा किया जाने वाला बलात्कार केवल व्यक्तिगत काम पिपासा शान्त करने के लिये किया जाता है जबकि सामूहिक बलात्कार के पीछे काम पिपासा के अलावा प्रतिपक्ष की महिला को प्रताड़ित करने की भावना काम करती है। जातीय और साम्प्रदायिक हिंसाओं में विरोधी पक्ष की किसी स्त्री के साथ बलात्कार करने के काफी मामले होते रहते हैं। समाज में शराब पीने का चलन भी बलात्कार के मामलों को बढ़ाने में सहायक है। शराब पीने के बाद व्यक्ति विवेकहीन और संवेदनाहीन हो जाता है। व्यक्ति की अमूर्त कल्पनायें साकार होने लगती हैं। ऐसे माहौल में यदि किसी शराबी को कोई महिला या स्त्री अकेले में दिख जाती है और बाकी सब परिस्थितियॉ भी अनुकूल होती हैं तो व्यक्ति बलात्कारी बन जाता है। 'शराब की आदत मनुष्य की आत्मा का नाश कर देती है और उसे धीरे–2 पशु बना डालती है। वह पत्नी, मॉ और बहन में भेद करना भूल जाता है।[3]

..... जो राष्ट्र शराब की आदत का शिकार है कहना चाहिये कि उसके सामने विनाश मुॅह बाये खड़ा है। इतिहास में इस बात के कितने ही प्रमाण हैं कि इस बुराई के कारण कई साम्राज्य मिट्टी में मिल गये। प्राचीन भारतीय इतिहास में हम जानते हैं कि वह पराक्रमी जाति जिसमें श्री कृष्ण ने जन्म लिया

था, इसी बुराई के कारण नष्ट हो गयी। रोम साम्राज्य के पतन का एक सहायक कारण निःसन्देह यह बुराई ही थी।[4]

बलात्कार के प्रमुख कारण निम्नवत् है–

1. पश्चिमी सभ्यता का अन्धानुकरण परिणामतः खाओ–पीओ मौज उड़ाओ की मानसिकता ।
2. स्त्री को केवल भोग की सामग्री समझना।
3. इन्द्रिय संयम का अभाव।
4. टी. वी. के नग्न सीरियल, बीजुअल मीडिया, अंग्रेजी फिल्में, सेक्सी दृश्यों की पटकथायें, झीने या तंग कपड़ों को धारण कर लोगों को आकर्षित करने वाले दृश्य।
5. वैयक्तिक स्वतन्त्रता के नाम पर नैतिक नियमों और सामाजिक मर्यादाओं को तोड़ने की मानसिकता।
6. राजनैतिक संरक्षण।
7. कठोर कानूनों की कमी। पुलिस द्वारा अपराधी को दिया जाने वाला संरक्षण
8. प्राथमिक रिपोर्ट का शीघ्र दर्ज न किया जाना जिससे डाक्टरी परीक्षण में प्रमाणों को मिटाना।
9. लम्बी एवं मँहगी न्यायिक प्रक्रिया।
10. कानून और समाज का पंगु होना, राजनेताओं द्वारा बलात्कार के मामलों में दखलंदाजी अपराधी के हौसले को बुलंद करती है।
11. ज्ञानवर्द्धक साहित्य व शिक्षा की कमी।

12. माता–पिता दोनों का नौकरी पेशा परिणामतः बच्चे के संस्कार युक्त परिवरिश का अभाव।

13. नग्नता को आधुनिकता मानने की मानसिकता।

'राष्ट्रीय अपराध ब्युरो' की रिपोर्टके अनुसार वर्ष 1996 में देश में 14849 बलात्कार हुये जबकि 1990 में यह संख्या 10,068 थी अर्थात् 1990 की तुलना में 1996 में 47.5 प्रतिशत अधिक बलात्कार हुये। इसका प्रमुख कारण है दूरदर्शन सीरियल और फिल्मों में प्रदर्शित हिंसा और सेक्स जिससे सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। अपरिपक्व मस्तिष्क के किशोर जो आयु की परिपक्वता पाये बिना ही सुख पाने के लिये लालयित होकर वेश्यागामी या बलात्कारी बनते हैं। इसका दूसरा कारण देह प्रदर्शन वाले वस्त्र और उत्तेजक हाव–भाव जो पुरूषों को बलात्कार करने के लिये प्रेरित करते हैं।[5]

जहाँ तक बलात्कार की समस्या के गॉधीवादी समाधान का प्रश्न है तो इस सम्बन्ध में उल्लेखनीय है कि बापू के समय बलात्कार जैसा दुष्कृत्य समस्या के रूप में कभी देश के समक्ष नहीं प्रस्तुत हुआ। यदा–कदा समाज में होने वाली दुष्चारित्रिक घटनायें, समाज के बहुसंख्य वर्ग की सच्चरित्रता की स्वच्छ चादर में ढँक जाया करती थीं और उन्हें सहिष्णु भारतीय संस्कृति अपनी प्रचण्ड जठराग्नि में पचा–बसा लिया करती थी। तथापि बापू के नैतिक दर्शन में इस समस्या का समाधान खोजा जा सकता है। मात्र कानून बनाकर, दण्ड का भय दिखाकर सभ्यता और संस्कृति का न तो निर्माण किया जा सकता है और न ही व्यावहारिक स्तर पर समाज द्वारा उसे 'अवश्य पालनीय' ही बनाया जा सकता है। गॉधी जी का मन्तव्य है कि मनुष्य एक नैतिक एवं आध्यात्मिक प्राणी है। अपने इस नैतिक और आध्यात्मिक स्वरूप की उपलब्धि के लिये ब्रह्मचर्य का पालन नितान्त आवश्यक है। ब्रह्मचर्य का तात्पर्य इन्द्रिय निग्रह है। प्रकृति ने मनुष्य को पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ प्रदान की है। और इन इन्द्रियों का अधिष्ठता है *'मन'*। मनुष्य अपनी पंच ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा

दृश्यमान जगत का सर्वविध उपभोग कर लेना चाहता है और यह चाकि्चक्य पूर्ण जगत इतना उत्तेजक और आकर्षक होता है कि सब प्रयास के बावजूद भी मन उसी में रमता रहता है। कंचन और कामिनी का मोहपाश तोड़ पाना बड़ा कठिन होता है। इसके लिये एक दीर्घ साधना करनी पड़ेगी। ब्रह्मचर्य का पालन मनसा, वाचा कर्मणा करना पड़ेगा। मन का नियन्त्रण न करने से मन चंचल हो जाता है, परिणामतः काम, क्रोध, मोह की उत्पत्ति होती है। वचन का नियन्त्रण न होने से मनुष्य प्रलाप, निंदा आदि दोषों का शिकार बन जाता है। शरीर का नियन्त्रण न होने से मनुष्य अस्वस्थ हो जाता है। ब्रह्मचर्य के महत्व के सम्बन्ध में बापू "मेरे सपनों का भारत" नामक ग्रन्थ में लिखते हैं– "वीर्य के व्यर्थ व्यय को प्राचीन साहित्य में जो इतना भयंकर कृत्य माना गया है वह कोई अज्ञान जन्य अंधविश्वास नहीं था। कोई किसान अगर अपने पास का बढ़िया बीज पथरीली जमीन में बोये या खेत का मालिक बढ़िया जमीन वाले अपने खेत में ऐसी परिस्थितियों में ऐसा बीज डाले जिसमें उसका उगना असंम्भव हो, तो उसके लिये क्या कहा जायेगा। भगवान ने पुरूष को ऊॅची से ऊॅची शक्ति वाला बीज प्रदान किया है और स्त्री को ऐसा खेत दिया है जिसके बराबर उपजाऊ धरती इस दुनिया में और कहीं नहीं है। अवश्य ही पुरूष की यह भयंकर मूर्खता है कि वह अपनी इस सबसे कीमती संपत्ति को व्यर्थ जाने देता है। उसे अपने अत्यन्त मूल्यवान जवाहरात और मोतियों से भी अधिक सावधानी के साथ इसकी रक्षा करनी चाहिये। इसी तरह वह स्त्री भी अक्षम्य मूर्खता करती है जो अपने जीवोत्पादक क्षेत्र में बीज को नष्ट होने देने के इरादे से ही ग्रहण करती है। वे दोनों ईश्वर प्रदत्त प्रतिभा के दुरूपयोग के अपराधी माने जायेंगे और जो चीज उन्हें दी गयी है, वह उनसे छीन ली जायेगी"[6]

विचार की दृढ़ता के साथ आचार का संयम शुरू हो तो सफलता मिले बिना रह ही नहीं सकती। स्त्री–पुरूष की जोड़ी विषय–सेवन के लिये हरगिज नहीं बनी है। कामेच्छा एक सुन्दर और उदात्त वस्तु है। इसमें लज्जित होने की कोई बात नहीं है परन्तु वह केवल सृजन कार्य के लिये ही बनायी गयी है। उसका और कोई उपयोग करना ईश्वर और मानवता के प्रति पाप है।[7]

आज जीवन में चतुर्दिक व्याप्त दुःखों का मूल कारण लोभ और अनियन्त्रित भोग है। जो भोग और वासनायें भौतिक जीवन में सृजन या विकास का मूल कारण है, वही अनियन्त्रित हो जाने पर व्यक्ति और समाज के पतन का हेतु भी बन जाती हैं। इसी लिये तो धर्म प्राण भारतीय संस्कृति में धर्मपोषित काम को ईश्वर रूप माना गया है। "धर्माविरूद्धो भूतेषु कामोस्मि भरतर्षभ्।[8]

ब्रह्मचर्य की व्याख्या करते–करते बापू की जीवन दृष्टि आध्यात्मिक हो जाती है। जीवन और जगत के प्रति अविवेक (अज्ञानता भरी) दृष्टि समस्त दुःखों का मूल कारण है। आहार, निद्रा, भय और मैथुन यह जीवन का पाशविक पक्ष है। जीवन केवल भोग–भोगने तक ही सीमित नहीं है उसका स्वरूप आध्यात्मिक है। मनुष्य एक नैतिक प्राणी है। यहॉ पर बापू भर्तृहरि के इस मत से पूर्णतया सहमत हैं कि त्रृष्णा कभी बूढ़ी नहीं होती हम ही बूढ़े हो जाते हैं। भोग नहीं भोगे जाते हम ही भोग लिये जाते हैं। तो क्या भोगवासनाओं और समस्त कामेच्छाओं से वैराग्य ले लिया जाय? क्या यह मनुष्य के लिये सर्वथा क्षेमकर और व्यवहार्य है? प्रश्न का उत्तर देते हुये बापू ईसावास्योपनिषद् के निम्न आर्ष निर्देश को प्राणिमात्र के लिये अनिवार्य मानते हैं–

ईसावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्।

तेन त्यक्तेन भुंजीथा मागृधः कस्यस्विद् धनम्।।[9]

प्रवृत्ति और निवृत्ति के बीच की मध्यम प्रतिपदा का अनुसरण करते हुये हम सन्तुलित परिवार का एवं समाज का निर्माण कर सकते हैं। इस गॉधीवादी चिंतन में न तो भोग की प्रदीप्त जठराग्नि है और न वैराग्य का दावानल यह सांसारिकता या भौतिकता का विनाश नहीं है बल्कि अध्यात्म के नियन्त्रण में भौतिकता का उन्नयन है। काया के माध्यम से माया के बन्धन को तोड़कर मायापति को प्राप्त करने का दिव्य आध्यात्मिक संदेश है। शिवसंकल्प है मानवात्मा को दिव्यात्मा के रूप में प्रतिष्ठित किये जाने का जहॉ तक मद्यपान (शराब) से होने वाले बलात्कार का प्रश्न है इस बावत् गॉधी जी का मन्तव्य है कि कानून बनाकर पूर्ण शराब बन्दी अपरिहार्य

कर दी जाये। शराब के प्रश्न के साथ खिलवाड़ नहीं किया जाना चाहिये। पूर्ण शराबबन्दी ही लोगों को इस अभिशाप से बचा सकती है। शराब के प्रति अपनी नफरत को बापू ने निम्न शब्दों व्यक्त किया है। "अगर मुझे घंटे भर के लिये भारत का डिक्टेटर बना दिया जाय तो सबसे पहले मैं शराबखाने को प्रतिफल (मुआवजा) दिये बिना बंद करा दूँगा।"[10]

बापू आचरण की सभ्यता को ही सच्ची सभ्यता मानते हैं। चरित्रहीन व्यक्ति समाज और राष्ट्र के लिये जिन्दा लाश की तरह होता है। सभ्यता तो आचार व्यवहार की वह रीति है जिससे मनुष्य अपने कर्तव्यों का पालन करे। कर्तव्यपालन और नीतिपालन एक ही चीज है। नीति पालन का अर्थ है अपने मन और अपनी इन्द्रियों को वश में रखना। यही 'सुधार' यानी सभ्यता हैं, जो कुछ इसके विरूद्ध है वह 'कुधार'–असभ्यता है।[11]

बलात्कार के इस समस्या के महापातक से बचने के लिये पैदा करनी होगी अहिंसक क्रान्ति। एक ऐसी जनक्रान्ति जिसका अगुआ होगा दार्शनिक, शिक्षक, राजनेता, समाजसेवी और धर्माचार्य और उसे बीड़ा उठाना होगा समूह मन बदलने का, स्वयं के स्तर पर आचरण की सभ्यता को प्रस्तुत करने का। भाषणों और सम्मेलनों से काम नहीं होगा। हर नागरिक को एक इकाई के रूप में अपने चरित्र बल को ऊँचा उठाना होगा।

अंत में युवाओं का आह्ववान करते हुये बापू कहते हैं युवकों को जो भविष्य के विधाता होने का दावा करते हैं, राष्ट्र का नमक –रक्षक तत्व होना चाहिये। यदि यह नमक ही अपना खारापन छोड़ दे तो उसे खारा कैसे बनाया जाय? मेरी आशा देश के युवकों पर है। उनमें से जो बुरी आदतों के शिकार हैं वे स्वभाव से बुरे नहीं है। वे उनमें लाचारी से और बिना सोचे समझे फॅस जाते है। उन्हें समझना चाहिये कि इससे उनका और देश के युवकों का कितना नुकसान हुआ है। उन्हें यही भी समझना चाहिये कि कठोर अनुशासन द्वारा नियमित जीवन ही उन्हें और राष्ट्र को

सम्पूर्ण विनाश से बचा सकता है, दूसरी कोई चीज नहीं।[12] देखना है भोगवाद की प्रचण्ड ऑधी में धूलिलुठिंत युवा पीढ़ी गॉधी चिंतन के इस दिव्य आलोक में अपना पथ प्रशस्त कर पाती है या नहीं।

सन्दर्भ सूची

1. अखण्ड ज्योति–सम्पादक–डॉ0 प्रणव पाण्ड्या अखण्ड ज्योति संस्थान धायामण्डी मथुरा पृष्ठ 5–6 अगस्त 2011।
2. डॉ0 संगीता पाण्डेय–भारत में सामाजिक समस्यायें पृष्ठ 116 प्रकाशक Tata mcgraw Hill Education Pvt. Ltd New Delhi 2012
3. महात्मा गॉधी। हरिजन, 9 मार्च 1934।
4. मो0 क0 गांधी–मेरे सपनों का भारत पृष्ठ 116 सर्वसेवा संघ प्रकाशन राजघाट वाराणसी संस्करण 1995।
5. संगीता पाण्डेय। भारत में सामाजिक समस्यायें–पृष्ठ 138, प्रकाशक Tata Mcgraw Hill Education Pvt. Ltd New Delhi 2012
6. मो0 क0 गांधी। मेरे सपनों का भारत पृष्ठ 112 सर्वसेवा संघ प्रकाशन राजघाट वाराणसी संस्करण 1995
7. श्रीमद्भगवद्गीता 7/11 प्रकाशक गीताप्रेस गोरखपुर।
8. ईसावास्योपनिषद् प्रथमश्लोक, गीताप्रेस गोरखपुर (उ0प्र0)
9. महात्मा गांधी। यंग इंडिया 25 जून 1931
10. महात्मा गांधी मेरे सपनों का भारत पृष्ठ 159 सर्वसेवा संघ प्रकाशन राजघाट वाराणासी 1995